रूसो का शिक्षा दर्शन

रूसो के दार्शनिक विचार

रूसो दार्शनिक एवं शिक्षा शास्त्री समाज के आडंबर पूर्ण भौतिकता वादी जीवन से बहुत खूब गया था। और इसीलिए उसने प्रकृति की ओर लौटो नारा लगाया। उसने व्यक्ति के सरल कपट हीन और आडंबर रहित व्यवहार को विशेष महत्व प्रदान किया और अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहा, कि जीवन में शांति प्राप्त करने हेतु मनुष्य प्रकृति का अनुसरण करें उसका कथन था, कि प्रकृति में अच्छाई स्वतंत्रता प्रवाह शासन हीनता एवं मधुरता है। प्रकृति ज्ञान का स्त्रोत और सबसे बड़ा शिक्षक है।

रूसो की शिक्षा दर्शन की विशेषताएं

1-प्रकृति के अनुसार शिक्षा

2-निषेधात्मक शिक्षा

3-निश्चयआत्मक शिक्षा

4-स्त्री शिक्षा पर बल

5-शारीरिक शिक्षा

6-गृह कार्य की शिक्षा

6-आज्ञा पालन की शिक्षा

7-धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा

रूसो के अनुसार शिक्षा का अर्थ

रूसो के अनुसार सच्ची सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के अंदर से प्रस्फुटित होती है जिसकी अंतर्निहित शक्तियों की अभिव्यक्ति है।उसने यह भी लिखा है कि बालक की स्वाभाविक शक्तियों एवं योग्यताओं के आंतरिक विकास का नाम ही शिक्षा है।

रूसो के अनुसार शिक्षा के तीन स्त्रोत होते हैं।

1-प्रकृति

2-मानव

3-पदार्थ

रूसो के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1-व्यक्ति का सच्चा इंसान बनाना

2-शारीरिक विकास करना

3-भावात्मक विकास करना

4-ज्ञानेंद्रियों का विकास करना

5-व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करना

6-प्रवृत्तियों का स्वतंत्र एवं स्वाभाविक विकास करना

7-वर्तमान जीवन में आनंद प्राप्त करना

<u>रूसो के अनुसार पाठ्यक्रम</u>

1-शैशवावस्था का पाठ्यक्रम-खेलकूद व्यायाम, दौड़ना, घूमना ,प्राकृतिक पदार्थ का अवलोकन करना, प्राकृतिक वातावरण का अनुभव करना, कहानी सुनना ,नाचना, छोटे-छोटे सामूहिक गान।

2-बाल्यावस्था का पाठ्यक्रम-निषेधात्मक शिक्षा, खेलना, कूदना ,तैरना ,देखना ,सुनना, ज्ञानेंद्रियों का स्वतंत्र प्रयोग करना, प्राकृतिक पदार्थों से अनुभव प्राप्त करना, नापना ,गिनना, निरीक्षक करना नृत्य ,संगीत आदि

किशोरावस्था का पाठ्यक्रम-प्राकृतिक विज्ञान, भूगोल, कला सामाजिक विषय, ड्राइंग, संगीत ,भाषा, गणित विषय पाठ्यक्रम आदि।

<u>रूसो के अनुसार शिक्षण विधि</u>

1-स्वांअनुभव की विधि

2-करके सीखने की विधि

3-निरीक्षण विधि

4-अन्वेषण विधि

<u>रूसो के अनुसार शिक्षक की भूमिका</u>-

दूसरों ने शिक्षा को गॉड स्थान तथा शिक्षार्थी को प्रमुख स्थान प्रदान किया है शिक्षक को कुछ व्याख्या नहीं देना चाहिए और कोई निर्देश भी नहीं देना चाहिए शिक्षा के दार्शनिक है जिसको केवल बालक का व्यवहार और अध्ययन के तरीके को देखना चाहिए।

<u>रूसो के अनुसार अनुशासन</u>-

रूसो बालक की स्वतंत्रता का समर्थक है और उस पर किसी प्रकार का बाहर नियंत्रण नहीं चाहता अनुशासन के लिए उसने निम्नलिखित दो सिद्धांत निर्धारित किए हैं।

1-प्राकृतिक परिणामों का सिद्धांत

2-स्वतंत्रता का सिद्धांत

रूसो की शिक्षा के गुण या आधुनिक शिक्षा में रूसो का योगदान-

1-शिक्षा में वैज्ञानिक प्रकृति का प्रवेश

2-शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रवेश

3-शिक्षा विधि एवं पाठ्यक्रम पर प्रभाव

4-औद्योगिक शिक्षा पर बल

5-शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति का प्रवेश

दोष

1-रूसो की शिक्षा को अव्यावहारिक बताया गया।

2-बालक में हृदय तथा बुद्धि के समन्वय का अभाव।

3-निषेधात्मक शिक्षा का अस्पष्ट रूप

4-शिक्षा में धर्म और नैतिकता के विकास की उपेक्षा।

5-बालक का पूर्ण बौद्धिक विकास नहीं

6-यह शिक्षा स्वयं साध्य न बनकर बालक शिक्षा का साधन बना।